

महावीर जन्मकल्याणक पर विशेष आलेख :



तीर्थकर महावीर की अहिंसक क्रांति से ही विश्व में शांति संभव

जैन परम्परा के 24वें एवं अंतिम तीर्थकर हैं भगवान महावीर स्वामी। आपको वर्द्धमान, सन्मति, वीर, अतिवीर के नाम से भी जाना जाता है। ईसा से 599 पूर्व बिहार प्रान्त के कुण्डलपुर (कुण्ड ग्राम) में महाराजा सिद्धार्थ एवं माता महारानी त्रिशला की एकमात्र संतान के रूप में चैत्र

शुक्ला त्रयोदशी को आपका जन्म हुआ था। उनकी शिक्षाएं, सिद्धांत आज अधिक प्रासंगिक हो गए हैं।

शुद्ध भावों का अनुभव अहिंसा: महावीर स्वामी की मूल शिक्षा अहिंसा है। आचार्य अमृतचंद्र जी ने हिंसा-अहिंसा के विवेक को सूत्ररूप में पहले रखा है, फिर उसकी व्याख्या की है। वे कहते हैं कि रागादि भावों की उत्पत्ति हिंसा है और शुद्ध भावों का अनुभव अहिंसा है-

अप्रादुर्भावः खलु रागादीनां भवत्यहिंसेति । तेषामेवोत्पत्तिर्हिंसेति जिनागमस्य संक्षेपः॥ 44॥

जैनसिद्धांत में 'प्रमत्तयोगातव्य प्राणव्यपरोपणं हिंसा' अर्थात् प्रमाद के योग से प्राणों का नष्ट करना हिंसा कहा गया है। प्राणों के नष्ट करने के पूर्व प्रमत्तयोग विशेषण दिया गया है। इस प्रमादयोगरूप पद से सिद्ध होता है कि जहां पर प्रमादयोग नहीं है किंतु जीव के प्राणों का घात है वहां पर हिंसा नहीं कहलाती और जहां पर प्राणों का घात नहीं भी है, किंतु, प्रमादयोग है, वहां पर हिंसा कहलाती है।

अहिंसा का सामान्य अर्थ है हत्या न करना या दंड ना देना ऐसा बिल्कुल नहीं होता। इसका व्यापक अर्थ है - किसी भी प्राणी को तन, मन, कर्म, वचन और वाणी से कोई नुकसान न पहुंचाना। मन में किसी का अहित न सोचना, किसी को कटुवाणी आदि के द्वार भी नुकसान न देना तथा कर्म से भी किसी भी अवस्था में, किसी भी प्राणी कि हत्या न करना, यह अहिंसा है।

जियो और जीने दो : आज विश्व हिंसा की ज्वाला में झुलस रहा है। ताजा उदाहरण यूक्रेन और रूस के मध्य चल रहा युद्ध है, दोनों देश लड़ रहे हैं जिसमें अपार जन-धन की हानि भी हो रही है। भगवान महावीर का प्रमुख सूत्र था -जियो और जीने दो। किसी भी रूप में हिंसा अशांति ही फैलाएगी। शांति के लिए अहिंसक जीवन शैली अत्यंत आवश्यक है। हिंसा की ज्वाला से जूझ रहे विश्व को भगवान महावीर द्वारा प्रतिपादित अहिंसा के शीतल जल से ही उसे राहत मिल सकती है।

महावीर के प्रत्येक उपदेश में अहिंसा निहित : भगवान महावीर स्वामी ने अहिंसा का जितना सूक्ष्म विवेचन किया है। वैसा अन्यत्र दुर्लभ है। महात्मा गांधी ने अहिंसा के बल पर ही अपने देश को स्वतंत्रता दिलायी। अहिंसा केवल निषेधात्मक ही नहीं होती, अपितु विधेयात्मक भी होती है। तीर्थकर महावीर के प्रत्येक उपदेश में अहिंसा निहित है। उन्होंने अहिंसक क्रांति के बल पर विश्वबंधुत्व और विश्वशांति का मार्ग प्रशस्त किया। बाह्य हिंसा की अपेक्षा यदि मानसिक हिंसा दूर हो जाय तो अहिंसक क्रांति का मार्ग आसानी से प्रशस्त हो सकता है। सभी धर्मों के प्रति सम्मान की भावना ही आधुनिक युग की सच्ची अहिंसा है। अहिंसा सभी धर्मों का मूलाधार है। कोई भी धर्म हिंसा की आज्ञा नहीं देता। अहिंसा की रक्षा के लिए हमारी प्रत्येक क्रिया निर्मल होनी चाहिए।

महावीर की अहिंसा शूरवीरों की : भगवान महावीर की अहिंसा शूरवीरों की अहिंसा है, कायरों की नहीं। पलायनवादी और भीरु व्यक्ति कभी अहिंसक नहीं हो सकता। अहिंसा की आराधना के लिए आवश्यक है -अभय का अभ्यास। सिंह जंगल का राजा होता है, वन्य प्राणियों पर प्रशासन व नियंत्रण करता है। इसी तरह महावीर

की अहिंसा है अपनी इन्द्रियों और मन पर नियंत्रण करना। भगवान महावीर स्वामी ने अपने समय में जिस अहिंसा के सिद्धांत का प्रचार किया, वह निर्बलता और कायरता उत्पन्न करने के बजाय राष्ट्र निर्माण और संगठन करके उसे सब प्रकार से सशक्त और विकसित बनाने वाली थी। उसका उद्देश्य मनुष्य मात्र के बीच शांति और प्रेम व्यवहार स्थापित करना था, जिसके बिना समाज कल्याण और प्रगति की कोई आशा नहीं रखी जा सकती।

प्राणी मात्र के प्रति अहिंसा की भावना : महावीर के अनुसार परम अहिंसक वह होता है, जो संसार के सब जीवों के साथ तादात्म्य स्थापित कर लेता है, जो सब जीवों को अपने समान समझता है। ऐसा आचरण करने वाला ही महावीर की परिभाषा में अहिंसक है। उनकी अहिंसा की परिभाषा में सिर्फ जीव हत्या ही हिंसा नहीं है, किसी के प्रति बुरा सोचना भी हिंसा है।

अहिंसा का सीधा-साधा अर्थ करें तो वह होगा कि व्यावहारिक जीवन में हम किसी को कष्ट नहीं पहुंचाएं, किसी प्राणी को अपने स्वार्थ के लिए दुःख न दें। 'आत्मानः प्रतिकूलानि परेषामव न समाचरेत्' इस भावना के अनुसार दूसरे व्यक्तियों से ऐसा व्यवहार करें जैसा कि हम उनसे अपने लिए अपेक्षा करते हैं। इतना ही नहीं सभी जीव-जन्तुओं के प्रति अर्थात् पूरे प्राणी मात्र के प्रति अहिंसा की भावना रखकर किसी प्राणी की अपने स्वार्थ व जीभ के स्वाद आदि के लिए हत्या न तो करें और न ही करवाएं और हत्या से उत्पन्न वस्तुओं का भी उपभोग नहीं करें।

अहिंसा के महान साधक एवं प्रयोक्ता महावीर : सचमुच महावीर अहिंसा के महान साधक एवं प्रयोक्ता थे। भगवान महावीर अहिंसा की अत्यंत सूक्ष्मता में गए हैं। आज तो विज्ञान ने भी सिद्ध कर दिया है कि वनस्पति सजीव है, पर महावीर ने आज से 2500 हजार वर्ष पूर्व ही कह दिया था कि वनस्पति भी सचेतन है, वह भी मनुष्य की भांति सुख-दुख का अनुभव करती है। उसे भी पीड़ा होती है। महावीर ने कहा, पूर्ण अहिंसा व्रतधारी व्यक्ति अकारण सजीव वनस्पति का भी स्पर्श नहीं करता।

अहिंसा के महानायक महावीर स्वामी ने जल, वृक्ष अग्नि, वायु और मिट्टी तक में जीवत्व स्वीकार किया है। उन्होंने अहिंसा की विशुद्ध व्याख्या करते हुए जल और वनस्पति के संरक्षण का भी उद्घोष किया। उनके सिद्धान्तों पर चलकर हमें वृक्ष बचाओ संसार बचाओ उक्ति को अमल में लाना होगा। प्रकृति और पर्यावरण के विरुद्ध चलने से भूकंप, सुनामी, बाढ़ आदि प्राकृतिक प्रकोपों का हमें सामना करना पड़ रहा है। परमाणु खतरों और आतंकवाद से जूझ रही दुनिया को भगवान महावीर के अहिंसा और शांति के दर्शन से ही बचाया जा सकता है।

अहिंसा के रक्षामूत्र हैं व्रत : तीर्थकर महावीर स्वामी की मूल शिक्षा अहिंसा है। पुरुषार्थसिद्धयुपाय ग्रंथ में अहिंसा को बहुत अधिक व्यापक बनाया गया है। उन्होंने कहा है कि प्रमादयोग से ही व्यक्ति अनेक प्रकार से झूठ बोलता है, कषाययुक्त भावों से ही व्यक्ति दूसरे के धन को हड़पने की चेष्टाएं करता है, रागयुक्त भावनाओं से मैथुन आदि में लिप्त होता है, मूर्च्छाभाव से परिग्रह एकत्र किया जाता है, ये सभी प्रमाद और कषाय भाव हिंसा के ही कारण हैं। अतः झूठ, चोरी, कुशील, परिग्रहवृत्ति आदि में हिंसा सम्मिलित है। इस प्रकार की हिंसा से बचने के लिए ही अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह व्रतों का पालन किया जाता है। अतः ये व्रत अहिंसा के रक्षामूत्र हैं। इन्हीं रक्षामूत्रों में रात्रि भोजनत्याग व्रत भी है। सात शीलव्रत-तीन गुणव्रत और चार शिक्षाव्रत भी अहिंसा की साधना में सहायक हैं। अनर्थदंडव्रत का विधान जैन दर्शन का विशेष अवदान कहा जा सकता है। समाज में अधिकांश कार्य निष्प्रयोजन होते हैं,

जिनको करने से आत्मा के विकास, या शुद्ध भावों की वृद्धि में कोई सहयोग नहीं मिलता, अपितु राग-द्वेष की प्रवृत्ति बढ़ती है, जो हिंसा को बढ़ाने वाली है। महावीर की अहिंसा जीवों को न मारने तक सीमित नहीं थी। उसकी सीमा सत्य-शोध के महाद्वार का स्पर्श कर रही थी। इसीलिए महावीर स्वामी की मूल शिक्षा अहिंसा है।

आज कठिनाई यह हो रही है कि महावीर का भक्त उनकी पूजा करना चाहता है, पर उनके विचारों का अनुगमन करना नहीं चाहता। उन विचारों के अनुसार तपना और खपना नहीं चाहता। महावीर के विचारों का यदि अनुगमन किया जाता तो समाज, देश और विश्व की स्थिति ऐसी नहीं होती।

अहिंसा से मानसिक आतंकवाद का खात्मा : भगवान महावीर के समय सबसे बड़ी बुराई वैचारिक मतभेद की पनपी थी और आज भी दुनिया इसी कारण से संघर्ष कर रही है। इसके लिए महावीर ने स्याद्वाद और अनेकान्त का अमोघ सूत्र दिया, जिससे यह बुराई समाप्त हो सकती है। मानसिक आतंकवाद आज की बड़ी समस्या है, इसका समाधान भगवान महावीर की अहिंसा में निहित है। अहिंसा केवल उपदेशात्मक और शब्दात्मक नहीं है। उन्होंने उस अहिंसा को जीया और फिर अनुभव की वाणी में दुनिया को उपदेश दिया।

कोई पांच बातों का करें संकल्प : भगवान महावीर के उपदेशों को आज नए संदर्भों में देखने की आवश्यकता है। हम जहां-तहां खनिजों की खोज में पृथ्वी को खोद रहे हैं, जल और वायु को प्रदूषित कर रहे हैं, पर्यावरणविदब स्थावरों की इस हिंसा से चिंतित हैं। विकास के नाम पर विलासता बढ़ रही है और साथ ही अमीर और गरीब के बीच की खाई भी बढ़ रही है। और क्या कहें, हम तो अहंकार पर छोटी-सी चोट पड़ने पर संसार को सिर पर उठा लेते हैं। पचासों बाते हैं, महावीर जन्म कल्याणक पर उनमें से कोई पांच बातें ही तो ग्रहण करें। ऐसा करके हम अपना आत्मकल्याण कर सकेंगे।

भगवान महावीर के विचार रोशनी देते हैं : आज देश व विश्व बड़े बुरे दौर से गुजर रहा है, हम बड़े-बड़े बमों, आणविक शक्ति से देश में शांति की स्थापना का सपना पाल बैठे हैं। मैं दृढ़ निश्चय से कह सकता हूं विश्व को आतंकवाद जैसी भयंकर बुराई पर काबू पाने के लिए तीर्थकर महावीर द्वारा प्रतिपादित अहिंसा एवं अनेकान्त-स्याद्वाद के सिद्धांत को अपनाये तो सार्थक हल निकल सकता है। आज समाज आधुनिक तो हुआ है, पर इस सफर में मानवता झुलसी है, नहीं तो क्या वजह है कि परिवार हो या समाज या फिर राष्ट्र, हर जगह राग-द्वेष व हिंसा के भाव ने विभिन्न रूपों में विस्तार लिया है। न वाणी पर संयम और न स्वयं पर नियंत्रण, ऊहापोह भरे इस वक्त में भगवान महावीर के विचार रोशनी देते हैं। भगवान महावीर का दर्शन अहिंसा और समता का ही दर्शन नहीं है, वह क्रांति का भी दर्शन है। उन्होंने अपने समग्र परिवेश को सक्रिय किया। उन्होंने जन-जन को तीर्थकर बनने का रहस्य समझाया।

अहिंसा के मसीहा तीर्थकर महावीर स्वामी ने उन सूत्रों को ओढ़ा नहीं था, साधना की गहराइयों में उतरकर आत्मचेतना के तल पर पाया था। आज महावीर के पुनर्जन्म की नहीं बल्कि उनके द्वारा जीये गए आदर्श जीवन के अवतरण/पुनर्जन्म की अपेक्षा है। जरूरत है हम बदलें, हमारा स्वभाव बदले और हम हर क्षण महावीर बनने की तैयारी में जुटें तभी महावीर जन्म कल्याणक मनाना सार्थक होगा।

**यद्यपि युद्ध कियो नहीं,
नाहि रखे असि तीर,
परम अहिंसक आचरण,
तदपि बनें महावीर ॥**

-डॉ. सुनील जैन संचय, ललितपुर



हार्दिक बधाईयाँ



* **श्री सम्यक जैन** यूपीएससी द्वारा आयोजित आई.ई. एस की परीक्षा में देश में नौवां स्थान प्राप्त किया है। आप पिछोर निवासी श्री राजेंद्रकुमार- विमला जैन 'गरोठ वालों' के सुपुत्र हैं आपने हायर सेकेंडरी में भोपाल जिले में किया है ,

आईआईटी रुड़की से सिविल इंजीनियर में बीटेक की उपाधि प्राप्त की है।

* बचपन से ही देश सेवा की भावना रखने वाले **सुयश जैन** का चयन भारती वायुसेना में फ्लाइट ऑफिसर के पद पर हुआ है। आप ललितपुर निवासी श्री



सुनीलकुमार-इंदिरा जैन के सुपुत्र हैं। प्रारंभिक शिक्षा ललितपुर से करने के पश्चात आई.आई.टी कॉलेज लखनऊ से बीटेक किया है।

* भारतीय जैन मिलन के 23 वें क्षेत्रीय अधिवेशन में **श्री अनिल जैन** भोपाल को वीर ऑफ द ईयर का पुरस्कार प्रदान किया गया है आप पंडित श्री लालचंदजी 'राकेश' के पुत्र हैं आप की पुत्रवधू **श्रीमती रेखा अनिल जैन** को इसी कार्यक्रम में संगठन का क्षेत्रीय मंत्री नियुक्त किया गया है।

गोलालारीय परिवार की ओर से हार्दिक बधाईयाँ



हृदय से आभार



श्री सुधेशकुमार जैन स्व. श्री पं.बाबूलाल जी जैन (ऊन) क द्वारा शिरोमणि संरक्षक हेतु सहयोग राशि भेंट की गई है। आप गोलालारीय दर्शन पत्रिका के कोषाध्यक्ष है। आप पार्श्वनाथ सहकारी साख संस्था, इंदौर के अध्यक्ष हैं

मुनिभक्त **श्री प्रदीपकुमार** स्व. श्री कैलाशचंद्र जैन (दैनिक विश्व परिवार) रायपुर द्वारा

गोलालारीय दर्शन पत्रिका के लिए शिरोमणि संरक्षक के लिए सहयोग राशि भेंट की है। आप प्रेस कॉन्सिल ऑफ इंडिया के सदस्य भी है कुछ दिनों पूर्व ही रायपुर में आयोजित समारोह में आपको जैन छत्तीसगढ़ गौरव रत्न से सम्मानित किया गया है। आप गोलालारीय दर्शन के सलाहकार प्रमुख भी हैं।

